किन्तु वध्वां तवैतस्यामदृष्टसदृशप्रजम् ।

न मामवति सद्वीपा रत्नसूरपि मेदिनी ।।65।।

अन्वयः किन्तु तव एतस्यां वध्वां अदृष्टसदृशप्रजम् मां सद्वीपा रत्नसूः अपि मेदिनी न अवति।

अनुवाद तथापि आपकी इस वधू सुदक्षिणा से अनुरूप (योग्य) पुत्र न पाने के कारण मुझको द्वीपों से युक्त तथा (समस्त) रत्नों को उत्पन्न करने वाली यह (विशाल) पृथ्वी भी सन्तुष्ट नहीं करती (कर पाती) है।

टिप्पणियाँ

अदृष्ट न दृष्ट अदृष्टा (नञ् तत्पुरुष), सदृशी प्रजा इति सदृशप्रजा (कर्मधारय), अदृष्टा सदृशप्रजा येन स अदृष्टसदृशप्रजः (बहुव्रीहि), तम्। वह जिसने अपने योग्य सन्तान को नहीं देखा है : मुझे, दिलीप को, जिसे योग्य अनुकूल पुत्र प्राप्त नहीं हुआ।

विशेष हिन्दू धर्मशास्त्रों के अनुसार जन्म लेने के पश्चात् मनुष्य को तीन ऋण चुकाने होते हैं। (1) ऋषि ऋण (ऋषि के प्रति ऋण), (2) देव ऋण (देवताओं के प्रति ऋण), (3) पितृ ऋण (पिता के प्रति ऋण)। पितृ ऋण को 'अन्त्य ऋण' भी कहते हैं। अर्थात् पितरों के प्रति ऋण सबसे अन्तिम ऋण है जिसे चुकाने के बाद अन्य कोई ऋण सिर पर नहीं रहता और मनुष्य ऋणमुक्त हो जाता है। ब्रह्मचर्य आश्रम के बाद जब मनुष्य विवाह करके गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करता है तब विधिपरिणीता पत्नी से पुत्र के जन्म लेने के पश्चात् वह पितृऋण से मुक्त होता है क्योंकि पुत्र के जन्म लेने से वंश

की परम्परा अविच्छिन होकर आगे चलती है। पितरों को पिण्डदान मिलता रहता है तथा उनके प्रति कुल के पुरुष का कर्त्तव्य पूरा हो जाता है।

अवति धातु अव् लट्, अन्य पुरुष, एकवचन अच्छी लगती है। प्रसन्न करती है।

विशेष अव् धातु के अनेक अर्थ हैं-रक्षा करना, चलना, मन को अच्छा लगना आदि। यहाँ अव् धातु 'प्रीणन' (मन को भाना) के अर्थ में है।

तव वध्वाम् तुम्हारी पुत्रवधू अर्थात् सुदक्षिणा में।

रत्नसूः रत्नानि सूयते इति जो रत्नों को देती है। 'पृथ्वी' का विशेषण बहुमूल्य उत्तम रत्नों को देने वाली पृथ्वी भी मुझे पुत्र के अभाव में प्रसन्न नहीं करती है। सब रत्नों से पुत्ररत्न ही श्रेष्ठ है। पृथ्वीविषयक यह विचार काफी प्रचलित है। देखिए, **''स्वयं प्रदुग्धेऽस्य गुणैरुपस्नुता वसूपमानस्य वसूनि मेदिनी।।''**(किरातार्नुनीयम्, प्रथमसर्ग)

मेदिनी पृथ्वी। मेदः अस्या अस्ति इति मेदिनी। विष्णु द्वारा मधु-कैटभ के वध के समय सम्पूर्ण पृथ्वी उनके मेद एवं माँस से भर गई थी अतः पृथ्वी का मेदिनी नाम पड़ा। देखिए,

'मधुकैटभयोस्त्वासन्मेदमांसपरिप्लुता।

तेनेयं मेदिनी देवी प्रोच्यते ब्रह्मवादिभिः।'